



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

# IJRSET

International Journal of Innovative Research in  
**SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY**



# INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 12, Issue 1, January 2023

**ISSN** INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA

**Impact Factor: 8.118**

9940 572 462

6381 907 438

[ijrset@gmail.com](mailto:ijrset@gmail.com)

[www.ijrset.com](http://www.ijrset.com)

## न्यू मीडिया का सामाजिक योगदान और उसका साहित्यिक अवलोकन

सोनिया कुमारी, शोधार्थी, नीलम यूनिवर्सिटी, कैथल(हरियाणा)

डॉ. मनोज कुमार, सहायक प्रोफेसर, मीडिया एंड मास कम्युनिकेशन विभाग, नीलम यूनिवर्सिटी, कैथल, हरियाणा

नए मीडिया को 1975-2000 के दौरान संचार के शक्तिशाली स्रोतों के रूप में विकसित किया गया था। न्यू मीडिया आधुनिक समाज की एक सर्वव्यापी विशेषता है। न्यू मीडिया ने बड़ी मात्रा में सूचनाओं को आसानी से और शीघ्रता से प्राप्त करने, प्रसारित करने, बनाने और मूल्यांकन करने, स्थान और समय से अलग किए गए कई अलग-अलग प्रकार के लोगों के साथ संचार करने और उनकी दैनिक गतिविधियों के लिए समय आवंटित करने के मामले में लोगों के जीवन को काफी हद तक बदल दिया है। छात्रों सहित समाज के सभी वर्गों द्वारा न्यू मीडिया, कंप्यूटर और मोबाइल प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया गया है क्योंकि उन्होंने लोगों की पढ़ने और अन्य मीडिया आदतों को पीछे छोड़ दिया है। आधुनिक समाज में बच्चे, किशोर, महिलाएं और समाज के अन्य वर्ग न्यू मीडिया से सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से प्रभावित होते हैं। शिक्षा, मनोविज्ञान और समाजशास्त्र जैसे विभिन्न क्षेत्रों में कई शोधकर्ताओं ने लोगों और समाज पर नए मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया है और नए मीडिया के उपयोग के फायदे और नुकसान की सूचना दी है।

नवीनतम न्यू मीडिया सर्वेक्षण के अनुसार, न्यू मीडिया की पैठ अत्यधिक उल्लेखनीय है क्योंकि उन्होंने दूरी को खत्म कर दिया है। अध्ययनों से यह भी पता चला है कि दुनिया के सभी शैक्षणिक संस्थानों में स्तर, क्षेत्र या गरीबी की एकाग्रता की परवाह किए बिना नए मीडिया की पहुंच है। जैसे-जैसे उपयोगकर्ताओं के बीच नए मीडिया का उपयोग नाटकीय रूप से बढ़ रहा है, शोधकर्ताओं को यह जानने की जरूरत है कि आधुनिक समाज में नए मीडिया का उपयोगकर्ताओं के समुदाय पर क्या प्रभाव पड़ता है। नए मीडिया तक छात्रों की पहुंच को स्कूलों और शिक्षकों द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है। छात्रों के बीच न्यू मीडिया एक्सपोजर बढ़ रहा है। प्रभावी अधिगम के लिए, नए मीडिया के उपयोग के पैटर्न को माता-पिता और शिक्षकों द्वारा सही तरीके से निर्देशित किया जाना चाहिए। न्यू मीडिया का खतरनाक रूप से दुरुपयोग किया जा सकता है यदि इसकी शक्ति का अन्यथा उपयोग किया जाता है। न्यू मीडिया एक जीवंत माध्यम है। विभिन्न सूचना प्रौद्योगिकियों के अभिसरण की शक्ति को नए मीडिया के माध्यम से महसूस किया जाता है। छात्रों के हाथों में इस शक्तिशाली उपकरण का सकारात्मक प्रभाव पाने के लिए इस क्षेत्र में और अधिक शोध की आवश्यकता है।

आधुनिक समाज में उपयोगकर्ताओं के दैनिक जीवन पर नए मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों की सूचना दी है। हिंसक और यौन सामग्री से संबंधित छात्रों पर नए मीडिया के नकारात्मक प्रभाव और सामाजिक संबंधों जैसे सामाजिक संबंधों में विस्थापन प्रभाव के बारे में कुछ चिंताएं हैं, जिसमें परिवार और दोस्तों के साथ बातचीत, शारीरिक गतिविधि और अन्य अवकाश-समय की गतिविधियां, जैसे पढ़ना शामिल हैं। और खेल रहा है। पिछले एक दशक के दौरान, आधुनिक समाज में विभिन्न उपयोगकर्ताओं के बीच न्यू मीडिया एक्सपोजर पर काफी कुछ सम्मेलन आयोजित किए गए हैं। शोध पत्रिकाओं ने लोगों के दैनिक जीवन में न्यू मीडिया के प्रभाव पर वैश्विक समुदाय का ध्यान भी केंद्रित किया है। न्यू मीडिया के प्रति लोगों के रवैये, न्यू मीडिया तक पहुंच, न्यू मीडिया के प्रभाव और अन्य पहलुओं की भी शोधकर्ताओं द्वारा जांच की जाती है। भारतीय और विदेशी पत्रिकाओं में न्यू मीडिया एक्सपोजर पर शोध लेख प्रकाशित होते हैं। हाई स्कूल के छात्रों सहित लोगों पर नए मीडिया के प्रभाव के बारे में व्यापक रुचि है।

भारतीय समाज के संबंध में स्कूल जाने वाले छात्रों के बीच अस्वास्थ्यकर न्यू मीडिया एक्सपोजर को रोकने के तरीकों और साधनों की शायद ही पहचान की है। इसलिए, यह जानना आवश्यक है कि पिछले अध्ययनों के परिणामों की पुष्टि या पुनर्विचार करने के लिए नए मीडिया का उपयोग स्कूल जाने वाले छात्रों को शारीरिक, शैक्षिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विकास के संदर्भ में कैसे प्रभावित करेगा। जैसे-जैसे नए मीडिया का उपयोग करने वाले स्कूल जाने वाले छात्रों की संख्या बढ़ती है, इसका प्रभाव छात्रों के दैनिक जीवन पर न्यू मीडिया के साथ-साथ छात्र न्यू मीडिया का उपयोग कैसे और क्यों करते हैं, इसकी जांच की जानी चाहिए। स्कूल जाने वाले छात्रों पर न्यू मीडिया के प्रभाव पर उपलब्ध साहित्य की जांच करने के बाद, यह स्पष्ट है कि कर्नाटक में विशेष रूप से मैसूर शहर में हाई स्कूल के छात्रों के विशेष संदर्भ में नए मीडिया के उपयोग, उपयोग और प्रभाव पर किए गए जांच सीमित हैं। इसलिए समस्या स्कूल जाने वाले बच्चों पर न्यू मीडिया का प्रभाव मैसूर शहर में चुनिंदा माध्यमिक विद्यालयों का एक अध्ययन को वर्तमान अध्ययन के लिए चुना गया था।

## साहित्य समीक्षा

अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंश है इसमें न केवल शोधकर्ता को पूर्व में हुए शोध का ज्ञान होता है बल्कि शोधकर्ता को संबंधित विषय पर जानकारी प्राप्त होती है जिसमें शोध करने में अच्छी मदद मिलती है। अतः आगे महत्वपूर्ण उपलब्ध विषय शोध लेखों, पुस्तकों आदि की समीक्षा की गई है।

श्रीनिवास (1952) ने अपने अध्ययन में पाया कि निम्न जाति के लोग उच्च स्तर प्राप्त करने के लिए सामूहिक जाति प्रथाओं और मान्यताओं को अपनाने की कोशिश करते हैं। यह सांस्कृतिक गतिशीलता की

प्रक्रिया को दर्शाता है जो भारत की पारंपरिक सामाजिक प्रणाली में हो रहा है। कर्नाटक के कुर्गों के अपने अध्ययन में पाया कि जाति पदानुक्रम में अपनी स्थिति को बढ़ाने के लिए निचली जाति द्वारा ब्राह्मणों के कुछ रीति-रिवाजों और प्रथाओं को अपना लिया और अपने स्वयं के कुछ रीति-रिवाज और प्रथाओं को छोड़ दिया। जिन्हें उच्च जाति द्वारा अशुद्ध माना जाता था उदाहरण के लिए उन्होंने अपने देवताओं को खाने, शराब पीने और पशु बलिदान को छोड़ दिया। उन्होंने पोशाक, भोजन और अनुष्ठानों के मामले में ब्राह्मणों का अनुकरण किया। जिसके द्वारा वे एक पीढ़ी के भीतर जाति पदानुक्रम में उच्च पदों का दावा कर सकते हैं। संस्कृतिकरण आमतौर पर उस समूहों में हुआ है जिन्होंने राजनीतिक और आर्थिक शक्ति का आनन्द लिया है। लेकिन अनुष्ठान रैंकिंग में उच्च स्थान पर नहीं है। इसलिए संस्कृतिकरण निचली जाति के लिए सामाजिक परिवर्तन का एक अंतर्जातीय स्रोत है क्योंकि संप्रदायिकता निम्न जाति को सामाजिक-आर्थिक वचिता के खिलाफ विद्रोह करने के लिए मजबूर करती है।

सिंगर और कोहन (1968) ने अपने अध्ययन को तीन भागों में बाटा है। पहले भाग में भारतीय समाज की जाति और सामाजिक संरचना से संबंधित है। दूसरा भाग अंतर्जातीय संबंधों की संरचना पर चर्चा करता है। तीसरे भाग में जाति व्यवस्था में परिवर्तन को दर्शाता है जो जाति व्यवस्था में गतिशीलता को उजागर करता है। राजनीति, अर्थशास्त्र और कानून में जाति, सयुक्त परिवार इनकी संरचना और परिवर्तन की चर्चा की गई है।

हार्डग्राव (1969) ने अपने अध्ययन में पाया कि व्यापक भौगोलिक क्षेत्र में जातियों की आर्थिक निर्भरता के टूटने के कारण जाति को एक नई पहचान मिली है। जाति की एकीकृत संस्कृति ने जाति के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक उत्थान के लिए सहयोग का कदम उठाया। नादर महाजन संग्राम ने नाद के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए गठित किया गया था। वर्तमान में वे तमिलनाडू की सबसे राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से प्रभुत्व जाति में से एक है।

लिंग (1969) ने अपने अध्ययन में पाया कि आगरा के जाटव, चमार या चमड़े के श्रमिकों के नाम से जानने वाली जातियों के समूह में से एक के निचले भाग में आते हैं। क्योंकि वे चमड़े के साथ काम करते हैं जो कि दूषित समझा जाता है क्योंकि वे गोमांस खाने के लिए प्रतिष्ठित है जो कि रूढ़िवादी हिन्दू धर्म के अनुसार अच्छा नहीं समझा जाता है। स्वतंत्रता पूर्व भारत में जाटवों ने जाति व्यवस्था में सम्मान और उच्च दर्जा पाने के प्रयास में आत्म सुधार की प्रक्रिया शुरू कर दी थी। स्वतंत्रता के बाद जाटव ने चमड़े के कामकाज के साथ जूता उत्पादन के एकाधिकार के रूप में विकसित हुआ था। सुरक्षात्मक भेदभाव की सरकारी नीति अनुसूचित जाति के लिए कुछ मामूली लाभ देती है।

चिटनिस (1972) ने अपने अध्ययन में पाया कि अनुसूचित जाति की स्थिति के सुधार के लिए शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया। अस्पृश्यता और जाति द्वारा भेदभाव के खिलाफ कानून और शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश के लिए आरक्षण और रोजगार के लिए विशेष अवसर प्रदान किए गए हैं जिससे अनुसूचित जातियों की समानता का दर्जा मिलने की उम्मीद है। विशेष रूप से शिक्षा को उपकरण के रूप में देखा गया है। जिसके माध्यम से अनुसूचित जाति के सदस्यों को सामाजिक संरचना के लिए सुसज्जित किया जा सकता है जबकि अनुसूचित जातियों के लिए शैक्षणिक सुविधाओं के उदार प्रावधान के पीछे उद्देश्य स्पष्ट और अच्छी तरह से तर्कसंगत है जैसे कि उन्हें प्रदान की गई सुविधाएं बेहतर और समान रूप से उपयोग की जाएगी जिससे स्कूल और कालेज शिक्षा के लिए अक्सर मिल सके। आरक्षण की नीति अनुसूचित जातियों के लिए समानता की प्राप्ति सर्वोत्तम सेवा अवसर प्रदान करेगी।

उत्तरदाता और मिश्रा (1971) ने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षा विशेष रूप से उच्च शिक्षा के माध्यम से अनुसूचित जातियां उच्च व्यवसायों को हासिल करने और प्रतिष्ठित व्यवसायों को प्राप्त कर सकती है। सामाजिक स्थिति से यह भी पता चलता है कि आरक्षण के बावजूद वर्ग एक और वर्ग दो के पदों में अनुसूचित जातियों के वर्तमान प्रतिनिधित्व और उनके लिए निर्धारित प्रतिशत में व्यापक अंतर है। हालांकि तृतीय और चतुर्थ श्रेणी में वे अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व करते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि व्यावसायिक गतिशीलता प्रकृति में क्षैतिज है।

झा (1973) ने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षा, पर्यावरण, उच्च व्यावसायिक स्तर सभी सकारात्मक रूप से अस्पृश्यता को समाप्त करने के प्रति दृष्टिकोण से संबंधित है। यानि उच्च शैक्षिक स्तर से उच्चतर व्यावसायिक स्तर प्राप्त किया जा सकता है। जबकि उम्र नकारात्मक रूप से अस्पृश्यता से संबंधित होती है यानी उच्च आयु अस्पृश्यता को समाप्त करने की दिशा में कम अनुकूल है। आपने अस्पृश्यता के लिए कोई सकारात्मक या नकारात्मक संबंध प्रकट नहीं किया।

देसाई (1976) ने अपने अध्ययन में पाया कि ग्रामीण गुजरात में कितने गावों में किन मामलों में और किस तरह से अस्पृश्यता का प्रचलन है जिसके लिए दो पैमाने विकसित किए हैं। एक निजी क्षेत्र के लिए और दूसरा सार्वजनिक क्षेत्र के लिए। इससे पता चलता है कि सार्वजनिक क्षेत्र में अस्पृश्यता को पालन या गैर पालन के संबंध में एकरूपता नहीं है। हालांकि यह सच है कि निजी क्षेत्र में अस्पृश्यता व्यापक रूप से प्रचलित है। लगभग सभी मामलों में देखने को मिलती है। सार्वजनिक क्षेत्र में हिंदू अस्पृश्यता का पालन नहीं करते हैं क्योंकि वे अपने दृष्टिकोण में अधिक उदार हो गए हैं।

सच्चिदानंद (1977) ने अपने अध्ययन में पाया कि पांच अनुसूचित जातियों से खींचे गए हरिजन कुलीन के दो सौ मामलों की जांच कि राजनीतिकरण ने हरिजन अभिजात वर्ग को छू लिया है लेकिन अनुसूचित जाति के लोग को इस प्रक्रिया से बहुत अधिक लाभ नहीं हुआ है। सकारात्मक भेदभाव की सरकारी नीति हरिजन व दूसरे समुदाय के बीच की खाई को ओर अधिक चौड़ा करती है और दोनों के बीच एकीकरण की प्रक्रिया में बाधा डालती है। इन्होंने कहा कि इस दुविधा से बाहर निकलने के लिए विकास की गति को तेज करना है और उसके बाद सुरक्षात्मक भेदभाव को समाप्त करना है।

देशपांडे (1978) ने अपने अध्ययन में पाया कि पूना के अनुसूचित जाति के लोग जो जीवन में अच्छी स्थिति और सरकार की सेवाओं में हो और उच्च शिक्षित है जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अलग पहचान बनाई है। इस अध्ययन से पता चलता है कि समाज कुल मिलाकर सभी क्षेत्रों और सभी स्तरों पर अनुसूचित के सदस्यों के प्रवेश को तेजी से स्वीकार कर रहा है।

काबले (1979) ने अपने अध्ययन में पाया कि किस प्रकार अनुसूचित जाति के लोग आदि काल में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक भेदभाव से पीड़ित है। इन्होंने लोगों के दमन और उत्पीड़ित समूह के बीच चेतना और जागृति की उत्पत्ति और विकास को भी प्रस्तुत किया है और बताया है कि किस प्रकार इन लोगों ने अपनी मुक्ति प्राप्त की है और अपवित्र समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाई है।

श्यामलाल (1984) ने अपना अध्ययन राजस्थान के जोधपुर शहर में किया और पाया कि किस प्रकार भंगी जाति सामाजिक और आर्थिक अक्षमताओं की स्थिति का सामना कर रही थी वे अपनी सामाजिक स्थितियों को सुधारने की ओर अग्रसर हुईं और प्रत्येक चुनाव में समुदाय ने कई भगियों के उम्मीदवारों को नामित करने के लिए पार्टी पर दबाव डाला और अपनी सामाजिक स्थिति को सुधारा है।

पाखथम्मा (1984) ने कर्नाटक में अनुसूचित जातियों और जनजातियों की समस्याओं का अध्ययन किया है। इन्होंने सामाजिक-आर्थिक स्थितियों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है जिसमें जनसांख्यिकीय विशेषताओं जाति, शैक्षिक पृष्ठभूमि, आवासीय पैटर्न, व्यावसायिक संरचनाएं राजनीतिक और संवैधानिक जागरूकता आदि शामिल हैं। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के आर्थिक और सामाजिक पिछड़ेपन से उत्पन्न समस्या किस प्रकार इसके रोजमर्रा के संघर्ष में रोशनी लाती है। समय-समय पर संस्थागत वैधता के साथ अंतर्जातीय सामाजिक असमानता ने कुछ लोगों को उनकी निम्न स्थिति को स्वीकार करने के लिए कम कर दिया। संवैधानिक प्रावधानों और नीति निर्माण का उद्देश्य लोगों के बीच समानता की स्थापना के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करना है।

**वंचित तबके में न्यू मीडिया का महत्व**

जाति जैसा कि हम सभी जानते हैं, भारत में पदानुक्रम, सगोत्र विवाह और कुछ विणिज्यिक अवरोधों पर आधारित है। भारत में अनुसूचित जातियों ने समाज के सबसे निचले पायदान पर कब्जा कर लिया। वे आर्थिक रूप से गरीब, सामाजिक रूप से वंचित और राजनीतिक रूप से वंचित हैं। एक आदमी का मानव जीवन पूरी तरह से जीवन के विभिन्न पहलुओं में व्यापक परिवर्तन के साथ नई सहस्राब्दी में प्रवेश किया है। ये बदलाव मुख्य रूप से तकनीकी, वैज्ञानिक और सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्रों में वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण के युग में मानव जीवन से संबंधित हैं। दूसरी तरफ अनुसूचित जातियां हैं जो राज्य और राष्ट्रीय औसत की तुलना में सामाजिक निम्न स्तर निम्न लिंगानुपात, निम्न साक्षरता स्तर और निम्न परिस्थितियों, आवास के निम्न स्तरों के साथ रहना। केंद्र और राज्य सरकारों दोनों द्वारा डिजाइन और निर्देशित नीतियों और योजनाओं के कार्यान्वयन के आधार पर सामाजिक आर्थिक स्थितियों के संबंध में अनुसूचित जातियों का सशक्तिकरण सरकारों द्वारा किए गए इन सभी प्रयासों के बावजूद, अनुसूचित जातियों का विकास नहीं हो पाया है। जब तक व्यक्ति का व्यावसायिक, आर्थिक और राजनीतिक पद उसके जीवन भर एक जैसा रहता है तब तक उसका व्यवहार अनिवार्य रूप से बहुत अधिक लचीला और गैर लचीला हो जाता है, जबकि विभिन्न लोगों की सामाजिक स्थिति व्यापक रूप से बदल जाती है।

एक अवधारणा के रूप में मानव विकास का महत्व या मूल्य तब तक होगा जब तक कि विशेष रूप से अनुसूचित जातियों के उपेक्षित लोगों के विकास के स्तर को समाज में उन्नत वर्गों के स्तर तक नहीं उठाया जाता है। इस दिशा में वर्तमान अध्ययन ने अनुसूचित जातियों के विकास का अध्ययन किया है। अध्ययन द्वारा किए गए निष्कर्ष या सुझाव, यदि ठीक से लागू किए जाते हैं, तो निश्चित रूप से अनुसूचित जातियों को समान अधिकार और समाज में वस्तुओं और सेवाओं तक समान पहुंच का आनंद देने के लिए सुनिश्चित करेगा।

## संदर्भ

- (1) [https //www. Statista.com](https://www.Statista.com), statistics and market data on social media & users – generated content .
- (2) [https//en.m Wikipedia .org](https://en.m Wikipedia .org). and IMRB-I-cube –oct. 2015.
- (3) राय, Umesh कुमार (2014) ,सामाजिक मीडिया का बढ़ता दायरा वरदान भी अभिशाप भी, एड्रिपिडिया प्रकाशन] Sahitya Samhita .org
- (4) Source –nagar, nigam, office, Raipur Chhattisgarh ,
- (5) Rich, Line (2012) New Technique and New Relation , New Tech, New Ties , now mobile communication is reswaping social conesion commutiages, word press organization ,pp-89 .



- (6) Taylor ,Jim (2007), Raising generation, tech, media fueled world , pp- 205-207.
- (7) ब्रीजल ,फ्लोरिक,(2009), उवइपवसवहल व्यक्तियांें एवं समुदायों पर मोबाइल फोन का प्रभाव [http: www.com/essey/ chicago](http://www.com/essey/chicago) .
- (8) <http://www.statista.com> >statistics>num> india
- (9) IMRB-I CUBE -2015 october 2015,[http://www.statista. com](http://www.statista.com).
- (10) Lorea,Grush(2015), The Internet Probably isn't harming Kids, Brains, The Debat over Disital Technology and young people, The British medical Journal pp-151
- (11) Marie,Rina(2016)- Lack sleep? Check your social media Habits, New Study Suggest The Journal of Preventive medicine, Vol.-85.pp-36-41
- (12) Jan van den Bulck(2016), Bed Time Mobile Phone use and Sleep in Adults,Social science&Medicine,Vol-148, pp-93-101
- (13) Social Media and Networking: The Good and Bad effects on Kids





**INNO SPACE**  
SJIF Scientific Journal Impact Factor  
**Impact Factor: 8.118**



**ISSN** INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA



# INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 **9940 572 462**  **6381 907 438**  **ijirset@gmail.com**



[www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Scan to save the contact details